ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा

पी-एच०डी० (मैथिली) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंधक प्रारूप

विषय : मैथिली कथा साहित्यमे दलित विमर्श

संकाय : मानविकी

शोध- निर्देशिका

(डॉ. रागिनी रंजन)

सहायक प्राचार्य सह विभागाध्यक्ष

मैथिली विभाग,

चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा ।

गवेषक

(प्रवीण कुमार)

यू.जी.सी.नेट-जे.आर.एफ.

BR04000077

पैट क्रमांक:- **E2211008**

ग्राम :- डरहार

पोस्ट:- लहेरियासराय

थाना:- बहादुरपुर

जिला:- दरभंगा (बिहार)

पिन कोड :- **846001**

.

<u>मैथिली कथा साहित्यमे दलित विमर्श</u>

प्रस्तावना :-

'दलित' क शाब्दिक अर्थ अछि दमित, उत्पीड़ित, शोषित ओ उपेक्षित व्यक्ति । एहि अवधारणाक तहत हमसभ एहिमे सम्पूर्ण वंचित वर्गक उत्पीड़ित समुदाय एवं समाजकेँ सेहो शामिल करैत छी । एकर व्यापक अर्थ दलित पैंथर्स नामक आंदोलन अपनयलक ओ भिन्न - भिन्न स्थान पर एकर प्रयोग भेल । मुदा विगत चारि दशकसँ भारतीय राजनीति ओ समाजमे दलित शब्द नव संदर्भ एवं अर्थ ग्रहण क' रहल अछि । दलित चिंतक लोकनि एहि पर व्यापक विचार विमर्श कयलनि । वस्तुतः ई सहमति भेल जे दलित शब्द सम्पूर्ण वंचित ओ उपेक्षित वर्गक लेल नहि अपितु भारतीय संविधानमे सम्मिलित अनुसूचित जाति [शेड्यूल कास्ट] क लेल प्रयोग कयल जायत ।

भारतीय साहित्य मध्य दलित विमर्श आंदोलनक रूपमे मराठी भाषामे आरम्भ भेल । तत्पश्चात हिन्दी, बंगला, मैथिली ओ अन्य साहित्यमे दलित साहित्य एवं दलित स्वर बेस प्रबल रूपमे प्रकाशमे आयल । यद्यपि भारतीय साहित्यमे दलित वर्गक उपस्थिति बौद्ध कालसँ मुखरित भेल अछि, मुदा एक लक्षित मानवाधिकार आंदोलनक रूपमे दलित साहित्य मुख्यतः बीसम सदीक देन अछि ।

दलित साहित्यक विषयगत प्रधानवस्तु सामाजिक समानता अवश्य थिक । मुदा इहो सत्य जे दलितक सामाजिक असमानताक कारणेँ हुनक सभक आर्थिक गरीबी ओ उपेक्षाक दंश झेलयकेँ पड़ल । दलितक प्रतिष्ठा सम्मान ओ अस्मिता, नौकरी, शिक्षा, संघर्ष एवं संगठन, ‘ अप्प दीपो भव:’, वैज्ञानिक – तार्किक सोच आदि मुद्दाकेँ दलित साहित्यमे स्थान देल गेल अछि ।

उदाहरण द्रष्ट्व्य अछि – राजकमलक ‘चन्नर दास’, रामदेव झाक ‘बट गाछक छाहरि’, प्रभाष कुमार चौधरीक ‘सुभद्रा हरण’, मायानन्द मिश्रक ‘मोम, आगि आ पाथर’, विभूति आनन्दक ‘जानवर’ आदि ।

जाहि प्रकार गीत गायब आओर सुनायब मुनुष्यक स्वभावक अंतर्गत अछि, ओहि प्रकार कथा कहब ओ सुनायब सेहो । कथाक चलन सभ्य – असभ्य सभ जातिमे चलैत आबि रहल अछि । आधुनिक समयमे कथा साहित्यक लेखनक शुरुआतकेँ साहित्यक दुनियामे लोकतंत्रक शुरुआत मानल जा सकैत अछि । कथा साहित्यमे आम लोकनिक विषय - वस्तु बना क’ लिखय जयबाक प्रारम्भ भेल । एहिसँ पहिने साहित्यमे मुख्य पात्र अधिकांश केवल अभिजात्य वर्गसँ छल, यद्यपि आई कथा साहित्यमे स्त्री, दलित, मुस्लिम, आदिवासी, किसान, मजदुर, आम लोक आदि कोनो केंद्रमे भ’ सकैत अछि ।

कथा साहित्य केवल मनोरंजनक वस्तु नहि अछि अपितु ई यथार्थक चित्रण एवं सम्प्रेषणक माध्यम सेहो अछि । कथा साहित्य सामाजिक,

सांस्कृतिक पक्षक बदलैत मानवीय दृष्टिकोणकेँ उजागर करबामे सक्षम होइत अछि ।

शोधक महत्व ओ आवश्यकता :-

कोनो विषय अध्ययनक केन्द्र बिन्दु तखनहिँ बनैत अछि, जखन ओकरा प्रति अतिरिक्त लगाव रहैत अछि । अध्ययनक कार्य करैत काल हमर रुचि विशेष रूपसँ दलित साहित्यसँ रहल अछि ।

मैथिली कथा साहित्यमे दलित विषयकेँ केन्द्रमे राखि जतबा कम रचना भेल अछि ओतबहिँ कम शोध सेहो भेल अछि । आन - आन भाषा साहित्यमे दलित साहित्य एक शाखाक रूपमे विकसित भ' रहल अछि ।

एहि शोधक आवश्यकता एहि लेल सेहो महत्वपूर्ण भ' जाइत अछि जे मैथिली कथा साहित्यमे दलित विषय पर एखनधरि शोधक कार्य नहि भेल अछि ।

पूर्वमे कयल गेल शोध विषयक कार्य :-

हमर जानकारीमे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय ओ अन्य विश्वविद्यालयमे 'मैथिली कथा साहित्यमे दलित विमर्श' विषय पर एखनधरि पी-एच० डी० उपाधि हेतु कोनो शोध कार्य नहि भेल अछि। प्रस्तुत शोधकार्य नव एवं महत्वपूर्ण अछि ।

शोध सामग्रीक स्रोत ओ प्रविधि :-

विवेच्य विषयक आलोचनात्मक, समीक्षात्मक पोथीक अध्ययन करब ओ एहिसँ पूर्व भेल अनुसंधान - कार्यक अध्ययन करब । शोध सामग्री स्रोतक रूपमे हम प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतक उपयोग करब । चयनित विषयसँ संबंधित सामग्रीक लेल सार्वजनिक, सांस्थानिक, निजी पुस्तकालय एवं इंटरनेट आदिसँ स्रोत एकत्रित करब ।

उपरोक्त शोध सामग्री स्रोतक आधार पर शोधकार्यकेँ समालोचनात्मक विधिसँ पूर्ण करबाक योजना अछि । एहि विधिसँ कथा साहित्य मध्य जे भाषा शैली, वातावरण, विषय–वस्तु, चरित्र-चित्रण आदि अछि तकर विस्तृत रूपसँ विमर्श कयल जायत ।

शोधक उद्देश्य :-

एहि शोधक प्रयास रहत जे मैथिल विद्वत लोकनिक ध्यान दलित वर्गक उत्थानक दिस आकृष्ट करब ओ दलित समाजक अस्मिता - अस्तित्व ओ उन्नतिक मार्गदर्शन करब । विवेच्य विषयसँ संबंधित पोथी, पत्र-पत्रिकाक अध्ययन क' साहित्य सामग्रीक रूपमे उपस्थित करब शोध-कार्यक मूल एवं निहित उद्देश्य अछि । एहिसँ विद्वान शिक्षक, पाठक एवं शोधार्थी हेतु विषयसँ संबंधित तथ्य उपस्थित भ' सकय ।

शोध प्रबंधक संभावित रूपरेखा :-

चयनित विषय पर प्रस्तावित शोध प्रबंधकेँ तैयार करबाक लेल मैथिली साहित्यसँ फराक आन - आन भाषा साहित्यक अध्ययनक आवश्यकता अछि । दलित वर्गक चित्रण ओ चर्चा विभिन्न भाषा साहित्यमे कयल गेल अछि, जकर विवेचन एहि शोध प्रबंधमे कयल जायत ।

अध्ययनक सुविधाक दृष्टिसँ शोध- प्रबंधकेँ निम्न रूपेँ अध्यायमे विभक्त करबाक योजना अछि –

1. पहिल अध्याय :- आरम्भसँ 1947 ई० सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श
2. दोसर अध्याय :- 1947 ई० सँ 1960 ई० सँ पूर्व धारिक कथामे दलित विमर्श
3. तेसर अध्याय :- 1960 ई० सँ 1980 ई० सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श
4. चारिम अध्याय :- 1980 ई० सँ 2000 ई सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श
5. पाँचम आध्याय :- 2000 ई० सँ अद्यपर्यंत धरिक कथामे दलित विमर्श

परिशिष्ट :-

[क] उपसंहार

[ख] अधीत ग्रंथक सूची ।

उपरोक्त रूपरेखाकेँ विशेष परिस्थितिमे आवश्यकतानुसार संशोधन ओ परिवर्तन सेहो कयल जा सकैत अछि ।

पहिल अध्याय :- आरम्भसँ 1947 ई० सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श

मैथिली कथा साहित्यक आरम्भ बीसम सदीक दोसर दशकसँ मानल जाइत अछि । आरम्भिक कालमे कथाकार लोकनि बेसी सामाजिक कुरीति ओ कुव्यवस्था विषयकेँ अपन कथाक आधार बना क' रचना कयलनि । एहि अध्यायमे मिथिला समाजमे दलितक तत्कालिन स्थितिक चर्चा कयल जायत ।

दोसर अध्याय :- 1947 ई० सँ 1960 ई० सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श

मैथिली कथा साहित्य जगतमे पाँचम दशक अबैत-अबैत सामाजिक कुव्यवस्था प्रति कथाकार लोकनिक कथामे व्यापकता भेटैत अछि । भारतीय स्वतंत्रताक संग मैथिली कथा साहित्यमे कथानक, शिल्प ओ

शैलीमे मैथिली कथा स्वतंत्र विधाक रूपमे महत्वपूर्ण भ’ गेल । एहि कालखण्डमे कांचीनाथ झा ‘किरण’, हरिमोहन झा, उपेन्द्र नाथ झा व्यास आदि कथाकार लोकनि अपन कथा मध्य मैथिली समाजकेँ यथावत् चित्रित केएने छथि । समाजक ओहि परिधिमे जे दलितक परिस्थिति छल तकर विभिन्न स्वरूपक चर्चा एहि अध्यायमे कयल जायत ।

तेसर अध्याय :- 1960 ई० सँ 1980 ई० सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श

मैथिली साहित्य जगतमे साठिसँ अस्सीक कालखण्ड कथा साहित्यक स्वर्णिम काल कहबामे कोनो अतिश्योक्ति नही होयत । एहि समयमे अनेक कथाकार लोकनि प्रखर रूपसँ उदित भेलाह । ललित, राजकमल चौधरी, सुधांशु ‘शेखर’ चौधरी, गोविन्द झा, मायानन्द मिश्र, सोमदेव, धीरेन्द्र, रामदेव झा आदि कथाकेँ व्यापक आयाम देलनि । एहि दशकमे विषय वस्तुमे आमूल परिवर्तन भेल ।

एहि अध्यायमे विवेच्य कालखण्डमे मैथिली कथा साहित्यमे वर्णित दलितक सामाजिक, राजनीतिक ओ आर्थिक स्थितिक विवेचन कयल जायत ।

चारिम अध्याय :- 1980 ई० सँ 2000 ई० सँ पूर्व धरिक कथामे दलित विमर्श

स्वाधीनताक पश्चात पत्र-पत्रिकाक बढ़ैत सुविधाक संग कथामे अभूतपूर्व विकास भेल । कथामे युग-चेतनाक वास्तविक यथार्थक चित्रण सजीवताक संग होमय लागल ।

एहि अध्यायमे मैथिली कथा साहित्यमे दलितक बदलैत परिस्थितिक विभिन्न स्वरूपक अनुशीलन कयल जायत ।

पाँचम अध्याय :- 2000 ई० सँ अद्यपर्यंत धरिक कथामे दलित विमर्श

सामाजिक कुरीति आ कुव्यवस्थासँ आरम्भ होइत ठाम - ठाम पर व्यापक परिवर्तन ओ विस्तार बनबैत मैथिली कथा साहित्यमे कालखण्डक विस्तृत प्रभाव पड़ल । विभिन्न कथामे भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, शोषण, अत्याचार, धार्मिक विवाद आदि समस्यासँ जुड़ल कथावस्तु रहैत अछि ।

एहि अध्यायमे मैथिली कथा साहित्यमे दलितक बदलैत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक ओ धार्मिक परिप्रेक्ष्यक चर्चा विस्तार सँ कयल जायत ।

उपसंहार :-

उपसंहारक अंतर्गत पाँचो अध्यायमे वर्णित विषयकँ सारांश रूपमे प्रस्तुत कएल जायत । समस्त शोध अध्ययन कार्यक महत्वपूर्ण बिंदु पर संक्षिप्त रूपेँ विवेचन कएल जायत ।

अधीत ग्रन्थक सूची :-

मैथिली

I. झा, डॉ॰ दुर्गानाथ 'श्रीश'; 2023-24 (पाँचम संस्करण); मैथिली साहित्यक इतिहास; जेनरल बुक एजेन्सी, पटना

II. मिश्र, मायानंद; 2014; मैथिली साहित्यक इतिहास; किसुन संकल्प लोक, सुपौल

III. झा, डॉ॰ दिनेश कुमार; 2012 (चतुर्थ संस्करण); मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास; मैथिली अकादमी, पटना

IV. झा, देवकान्त; 2017; आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

V. झा, बासुकीनाथ (सं॰); 2003; मैथिली कथाक विकास; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

VI. श्रीनिवास, शिवशंकर (सं॰); 2004; मैथिली कथा संचयन; नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली

VII. झा, डॉ॰ रमानंद 'रमण'; 2020; मैथिली कथाक धाप; अखियासल प्रकाशन, मधुबनी

VIII. मिश्र, डॉ० मदनेश्वर, झा, डॉ० इंद्रकांत (सं०); 1986; कथा-वाटिका; मैथिली अकादमी, पटना

IX. चौधरी, प्रभास कुमार; 1988; कथा प्रभास; मैथिली अकादमी, पटना

X. पाठक, डॉ० अमरेश, भाजद्वाज, श्री मोहन (सं०); 2013 (पंचम संस्करण); कथा संग्रह; मैथिली अकादमी, पटना

XI. झा, श्रीकामदेव (सं०); 2015; मैथिलीक बिसरल कथा; मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा

XII. नवीन, देवशंकर (सं०); 2020 (द्वितीय संस्करण); साँझक गाछ; राजकमल प्रकाशन, पटना

XIII. आनंद, विभूति (सं०); 2012; ललित समग्र; मैथिली अकादमी, पटना

XIV. मेहता, डॉ० अशोक कुमार; 2012; सम्प्रति; विभाग चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय, दरभंगा

XV. झा, प्रो० श्री उमानाथ; 1984; अतीत; मैथिली अकादमी, पटना

XVI. मिश्र, पंचानन (सं०); 2021; दलित मैथिली कथा संचयन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

XVII. अशोक; 2007; मैथिल आँखि; मैथिली अकादमी, पटना

XVIII. अशोक; 2022; कथा-पाठ; सिद्धिरस्तु, दिल्ली

XIX. मिश्र, डॉ० कलानाथ (सं०); 2010; समकालीन मैथिली कथा - साहित्य; चेतना समिति, पटना

XX. यादव, श्री सुभाषचन्द्र; 2020; (दोसर संस्करण); घरदेखिया; शेखर प्रकाशन, पटना

XXI. झा, हरिमोहन; 2011 (छठम संस्करण); खट्टर ककाक तरंग, शेखर प्रकाशन, पटना

XXII. झा, डॉ० रमानन्द 'रमण' 1995; अखियासल; अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी

XXIII. झा, डॉ० चेतकर; 1989; मैथिली कथा साहित्य; मैथिली अकादमी, पटना

XXIV. झा, डॉ० नीता; 2002; पृथा; प्रभात प्रकाशन; लहेरियासराय, दरभंगा

XXV. अशोक; 2017; डैडीगाम; नवारम्भ, पटना

हिन्दी

I. कुणाल, आचार्य किशोर; 2021 (द्वितीय संस्करण); दलित - देवो भव (द्वितीय भाग); प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

II. तिवारी, पं० नन्दकिशोर; 2017; ' चाँद' अछूत अंक; वाणी प्रकाशन

III. गुप्ता, रमणिका; 2003; दलित कहानी संचयन; साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

IV. रामासामी; पेरियार ई०वी०; 2020; जाति-व्यवस्था और पितृसत्ता; राधाकृष्ण प्रकाशन

V. सिंह, डॉ० एन०; 2016 (आवृत्ति संस्करण); दलित साहित्य के प्रतिमान; वाणी प्रकाशन

VI. सिंह, डॉ० श्यौराज बेचैन; 2018 (आवृत्ति संस्करण) सामाजिक न्याय और दलित साहित्य; वाणी प्रकाशन

VII. लिंबाले, डॉ० शरणकुमार (सं०), वायचल, डॉ० विनोदकुमार वि० (अनु०); 2017; दलित पैन्थर भूमिका एवं आन्दोलन; वाणी प्रकाशन

पत्र-पत्रिका :-

i. मिथिला मिहिर

ii. मिथिला दर्शन

iii. घर- बाहर

iv. उपमान

v. देसिल बयना

<u>शोध- निर्देशिका</u> **<u>गवेषक</u>**

(डॉ० रागिनी रंजन) **(प्रवीण कुमार)**